PAGE NO.
DATE / /

यूरोप में शूर धर्म

यूरोप में शूर धर्म अथवा शूरत्व सामंतवाद की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति थी। यह एक बहादुरों की टोली अथवा संस्था थी, जिसके सदस्य नाइट कहलाते थे, जिनका काम था चर्च की सुरक्षा करना और निर्बलों तथा दलितों को सुरक्षा देना। शूरधर्म मध्ययुग में नैतिक अनुशासन का सर्वोत्तम माध्यम था। यह राजनीतिक, धार्मिक एवं कानूनी लक्षणों से युक्त एक महत्वपूर्ण मध्यकालीन सामाजिक संस्था थी। यह संस्था सामन्तवाद की सैनिक संस्था के अंग के रूप में विकसित हुई। अतः इसे सामंतवाद का पुष्प कहा गया है।

शिवेलरी (Chivalry) शब्द की व्युत्पत्ति फ्रेंच शब्द 'शेवल' (Cheval) से हुई है। जिसका अर्थ है घोड़ा। थामसन और जॉनसन के अनुसार 'शिवेलरी' और 'कैवेलरी' (Cavalry) एक ही प्रकार के शब्द हैं और दोनों लैटिन शब्द 'कैबेलस' (Caballus) से बने हैं, जिसका अर्थ घोड़ा होता है। कालान्तर में यह घुड़सवार या घुड़सवारी एक संस्था के रूप में परिणत हो गई। यह एक नैतिक तथा सैनिक संस्था थी जिसके कारण सामंतवाद में संशोधन तथा पूर्णता आई।

शूर धर्म की उत्पत्ति एवं विकास :

चार्ल्स मार्टेल ने रणक्षेत्र में मुस्लिम आक्रमणकारियों का सामना करने के लिए सामन्त घुड़सवारों का (Vassal Horsemen) का संगठन किया था। इसी के परिणामस्वरूप घुड़सवार वर्ग अस्तित्व में

I धर्मयुद्ध 1096 - 99
II " - 1147 - 49
III " - 1189 - 92

आगे चलकर सामंत के शासन के अंतर्गत कृषक अपनी सुरक्षा के लिए घुड़सवारों पर निर्भर करने लगे। धीरे-धीरे मध्ययूरोप के देशों में घुड़सवारों को रखने का रिवाज चल पड़ा। [illegible] के अधिकांश मुख्य यूरोप के अलग देशों में भी घुड़सवारों के दल अस्तित्व में आने लगे। ये प्रारंभ में सामंतवादी व्यवस्था के अंतर्गत थे तथा इनसे संचालित होते थे लेकिन बाद में इनका स्वतंत्र अस्तित्व कायम हो गया। इस प्रकार समाज में घुड़सवारों का एक अलग वर्ग बन गया और सदियों तक यूरोप में अश्ववाहिनी सेना का महत्व बना रहा।

शूरधर्म के विकास में चर्च का सहयोग भी महत्वपूर्ण माना जाता है। प्राचीन यूनान और रोम में शूर-धर्म का अभाव था परंतु जब जर्मनों ने ईसाई धर्म को अंगीकार कर लिया तब चर्च ने भी शूर धर्म को सैन्य की एक विशेष विद्या के रूप में स्वीकार कर लिया। चर्च राज्य में शांति एवं व्यवस्था स्थापित करने के लिए नाइटों की नियुक्ति की गई।

इसके बाद धर्म युद्धों का युग आया। जिसमें सैनिक सेवा धार्मिक कर्तव्य माना जाने लगा। नाइट का सैनिक तथा सामंती संस्थान के साथ-साथ धार्मिक संस्थान भी बन गया। नाइट की उपाधि धार्मिक समारोह के आयोजन के बाद दी जाती थी। अतः नाइटों का काम न केवल जनजीवन की रक्षा करना था बल्कि धर्मयुद्धों के उपरांत ईश्वर और उनकी चीजों एवं कुटियों की रक्षा करना था। ईश्वरीय विधि-विधानों को तोड़ने वालों

के ईसाई सेना में इसका प्रयोग किया गया।

इस संस्था के विकास में यूरोप के तत्कालीन शासकों ने भी सहयोग किया। शासकों ने अपनी सेना में नाइटों को स्वतः प्रवेश किया। इससे इनके साम्राज्य सुरक्षित हुए तथा शासकों ने इन्हें वीरता-पूर्ण, क्रीड़ाओं और खेलों में शामिल कर इनको महत्व दें। इंग्लैंड और फ्रांस के शासक नाइट बनने के उपलक्ष में बड़े समारोहों का आयोजन करते थे। जैसे 1453 ई० में बर्गंडी के ड्यूक फिलीप ने नाइटों के बहादुरी के प्रदर्शन के लिए वृहत समारोह का आयोजन किया थी।

इस तरह समाज में नाइटों की काफी प्रतिष्ठा थी, लोगों में इनके प्रति आदर और सम्मान की भावना थी इन्हीं कारणों से मध्ययुग में शूरधर्म का व्यापक विकास हुआ।

शूरधर्म का स्वरूप एवं प्रकृति

शूरधर्म का स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय था और इसके सदस्यों की कोई देशीय सीमा नहीं थी।

हर एक नाइट एक सामंत था, पर सभी सामंत एक नाइट नहीं थे। यदि कोई सामंत अपनी योग्य प्रतिभा से लोगों को प्रभावित करता था तो उसे नाइट की उपाधि दी जाती थी। नाइट वर्ग में शामिल होने के लिए वंशानुगत सैन्य सेवा की योग्यता अनिवार्य

थी। कभी-कभी साधारण सैनिक भी इस वर्ग में शामिल कर लिए जाते थे अगर उन्होंने वीरता के क्षेत्र में कोई विशिष्टता प्राप्त की हो।

नाइट बनने के लिए किसी नवयुवक का उच्च कुल का होना आवश्यक था। उसकी शिक्षा के लक्ष्य युद्धकला में दक्षता और दरबारी शिष्टाचार होते थे। महिला के प्रति विश्वासी होने पर उन्हें मुक्ति मिलती है यह विचारधारा उनमें विद्यमान थी।

नाइट पद संबंधी प्रशिक्षण का प्रारंभ सात वर्ष की आयु में ही हो जाता था। ऐसे छात्रों को बालभृत्य कहते थे। चौदह वर्ष की आयु में यह बालभृत्य एस्क्वायर (esquire) बन जाता था। सामंत और नाइट उसे सैनिक प्रशिक्षण देते थे और सामंती किलों की स्त्रियाँ उन्हें गाने और शिष्टाचार सिखलाती थीं। इक्कीस वर्ष की आयु में उसे नाइट का पद प्रदान कर दिया जाता था। इस अवसर पर एक विशेष समारोह का आयोजन किया जाता था जिसका स्वरूप कुछ-कुछ धार्मिक होता था। रात भर वह अनेक प्रकार के खेल खेलता था और तब उसे स्नान के पश्चात दीक्षित किया जाता था। इसके उपरांत उसे नाइट के कर्तव्य-संबंधी उपदेश दिए जाते थे और अंत में उसे एक तलवार से अलंकृत किया जाता था।

इस तरह सामंतों का एक व्यापक समाज था जिसकी अपनी आचार संहिता तथा निश्चित आदर्श थे। सैनिक प्रशिक्षण एवं युद्धकार्य में लगभग वंशानुगत हो जाने के कारण यह वर्ग समाज का सबसे शक्तिशाली

कुशल और विशेष रीति-रिवाजों पर आधारित एक अलग वर्ग माना जाने लगा। नाइटों का यह विशिष्ट वर्ग सारे यूरोप में फैला हुआ था। अतः आदर्शों एवं रीति-रिवाजों पर आधारित इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के रूप में स्वीकार किया गया।

सामाजिक स्वरूप :

शूर धर्म की सेवाओं का स्वरूप सामाजिक था अर्थात् सामंती सेवाओं का स्वरूप आर्थिक और सैनिक था।
शूरधर्मी सेवाओं की पूर्ति के लिए आचार-व्यवहार, शिष्टाचार, सम्भाषण एवं इनके वैभव के ढंग सीखते थे। इन्हें घुड़सवारी और अस्त्र-शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण लेना पड़ता था। इसके पश्चात् इनकी गणना सम्मानित व्यक्तियों में [illegible] आने लगी थी।
इनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वह सत्यवादी होगा, चर्च का रक्षक होगा, नारियों को संरक्षण देगा, राज्यों में शांति की स्थापना करेगा और उपद्रवकारियों का भी मुकाबला करेगा। नाइट नारियों के प्रति अति सम्मान की भावना रखते थे। क्योंकि इनके प्रेम और सम्मान की भावना मुक्ति का साधन माना जाता था। यह सेवा नयी जगत में अत्यंत लोकप्रिय हो गया था।

शूर धर्म में कर्तव्यों की भांति मनोरंजन पर भी जोर दिया जाता था। सर्वोत्कृष्ट मनोरंजन टूर्नामेंट था। टूर्नामेंट का आयोजन सामंत के बड़े लड़के को नाइट बनाए जाने के अवसर पर अथवा किसी शादी के उपलक्ष्य में किया जाता था। घोड़े पर सवार केवल दो नाइटों के बीच के युद्ध को जाउस्ट कहा जाता था।
बारहवीं शताब्दी में मार्शल विलियम को

को टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी माना गया। 1170 ई० में इसकी योग्यता से प्रभावित होकर इंग्लैंड के शासक हेनरी II. ने अपने पुत्र राजकुमार हेनरी को शस्त्र विद्या सीखाने के लिए नियुक्त किया था।

नाइट वीरता के अनेक उच्च आदर्शों का पालन करते थे लेकिन कुछ नाइट ऐसे भी थे जो निम्नवर्ग के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते थे, व्यापारियों तथा उनके काफिलों पर आक्रमण कर लूटते थे।

ऐसे अपराधों के लिए नाइटों को दंडित भी होना पड़ता था। इन्हें सजा देने के लिए आम सभा का आयोजन किया जाता था। सभासदों के सामने इसे खड़ा कर इसकी तलवार छीनकर तोड़ दी जाती थी। इसके घोड़े की पूंछ काट दी जाती थी। इसके बाद इसकी पदवी छीन ली जाती थी।

इन तमाम त्रुटियों के बावजूद भी नाइट आमतौर पर सत्यवादी, शुद्ध आचरण वाले, विश्वासी और सहृदयी होते थे। इनकी वीरता का वर्णन तत्कालीन लोक कथाओं में संग्रहीत हैं जैसे

(1) 'बियोवुल्फ' जो सबसे पुराने लोककाव्यों में से एक है, पहले ऐंग्लो-सैक्सन भाषा में गाया जाता था। बाद में इसे लिपिबद्ध कर दिया गया। इसमें विकिंग के बियोवुल्फ भयानक सर्प दैत्य को ~~से~~ पर आक्रमण कर मार डालता है (2) इसी तरह जर्मन लोककाव्य 'निबेलुंगनलीड' को रिचर्ड वैगनर के गीत-नाट्यों ने अमर कर दिया। यह भी सर्पदैत्य का वध करता है तथा एक महिला की रक्षा के लिए आग के घेरे से गुजरता है (3) स्पेन के राष्ट्रीय महाकाव्य 'एल सिड' में एक नायक ईसाईयत और शूरता के विचारों से भरकर मूरों के साथ युद्ध किया था।

फ्रांस का सर्वाधिक चर्चित महाकाव्य रोलां के गीत है। रोलां शार्लमा के दरबार का एक सरदार था जिसने स्पेन के मूरों से युद्ध करता हुआ मारा गया था। इस काव्य में नाइटों की शूरता, ईसाइयत और देश-प्रेम के विषय में जानकारी मिलती है।

नाइट वीरता के साथ-साथ अपने प्रेम प्रसंगों के लिए भी चर्चित थे। इस काल के कवियों तथा न्यायालयों ने प्रेम की व्याख्या की और इसके लिए कानूनों का संग्रह किया। त्रूवादोर्स (Troubadours) की कविताओं में कुछ प्रतिष्ठित महिलाएं जैसे नारबोन (Narbonne) और फ्लैंडर्स (Flanders) की काउन्टेस तथा अन्य महिलाओं द्वारा संचालित प्रेम न्यायालयों के संकेत मिलते हैं जहाँ अधिकांश महिलाओं और कम ही पुरुषों द्वारा मुकदमों के फैसले किए जाते थे। प्रायः दस, चौदह और सोलह महिलाओं द्वारा न्यायालय का कार्य सम्पादित किया जाता था। न्यायासन पर बैठते ही ये महिलाएं प्रेम प्रसंगों से उत्पन्न झगड़ों का फैसला किया करती थीं और कानून का उल्लंघन करने वाले को दंडित किया करती थी

धार्मिक स्वरूप :

धर्म युद्धों ने नाइटों के जीवन में एक गति लाया, उसे एक धार्मिक आधार प्रदान किया। उसे मानसिक तथा नैतिक श्रेष्ठता प्रदान की और उन्हें डाकाखोरी, लूट तथा युद्ध के धन से दूर रहने की सीख दी। मध्ययुग की धार्मिक प्रवृत्ति का शूरधर्म पर व्यापक प्रभाव पड़ा। धर्म और सामरिकता एक दूसरे से मिश्रित हो गए। धर्म युद्धों (1096[I]-99, 1147[II]-49, 1189[III]-92) के युग में वैरागियों के नाइट-टेम्पलर्स

और नाइट हॉस्पिटलर्स जैसे सैनिक सम्प्रदाय उठ खड़े हुए। इन सम्प्रदायों के सदस्य चार्ल्स मार्टेल की अश्ववाहिनी सेना को परिवर्तित किया थी

कालान्तर में कुइरासियों के इस वर्ग का रूपान्तरण होता गया। इस वर्ग ने धीरे 2 सामंती व्यवस्था से अपने को स्वतंत्र कर लिया। अब यह नियम बन गया कि सामंत परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त उच्च कुल के संस्कार वाले व्यक्ति भी इस वर्ग में शामिल हो सकते थे या साधारण वर्ग के संस्कार युक्त व्यक्ति भी इस वर्ग में शामिल हो सकते थे। अतः लोग नाइट बनकर सामंतों की तरह सम्मान एवं प्रतिष्ठा पाने को बेचैन हो गए। नाइटों को बड़े काउन्टों के बराबर या सामंतों के वेतन के बराबर वेतन मिलता था। अतः

अतः धीरे-धीरे शूर धर्म पतन की ओर अग्रसर होने लगा।

शूर धर्म के पतन के कारण :-

शूर धर्म के विनाश के तत्व इसी के भीतर मौजूद थे चूंकि सामंतवाद के साथ ही इस वर्ग का जन्म हुआ था, अतः उसके पतन के साथ ही इसका भी पतन हो गया। (1) नाइट अपने रीति-रिवाज, आचार संहिता और आदर्शों को त्यागकर, भ्रष्टता के शिकार हो गए। विलासी नाइट अकर्मण्य बनते गए और शूरता के सारे लक्षण भूलते गए।

2) फ्रांस में वकीलों तथा अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों को भी नाइटों की तरह सम्मानित किया जाने लगा। इससे सैनिकों के बीच एक नये सैनिक वर्ग का उदय हुआ जो नाइटों से कम सम्मानित नहीं था। धीरे 2

इस वर्ग के लोगों की शोभा चली गई और धीरे-धीरे नाइटों का महत्व घटता चला गया।

3) तोपखाना और राष्ट्रीय विकास के कारण उत्थान पर आधारित शूरत्व का महत्व घटता गया। वीरता का युग समाप्त हुआ और संभवतः साहसिक का युग आया। सोलहवीं सत्रहवीं सदी के व्यापारिक एवं वाणिज्य प्रधान जगत में नाइटों का चरित्र हास्यास्पद प्रतीत होने लगा। इस प्रकार धीरे-धीरे नाइट प्रथा पर आधारित शूरधर्म का अंत हो गया। डॉन क्विक्जोट में शूरधर्म के पतन का विस्तृत वर्णन मिलता है।

4) मध्ययुग में बारूद तथा बंदूक का आविष्कार हो चुका था, अतः भाले और कवच अनुपयोगी जान पड़े। राजाओं ने स्थायी पैदल सेना रखना प्रारंभ कर दिया जिससे नाइटों पर निर्भरता कम हो गई। यद्यपि फ्रांस के हेनरी II ने इसकी महत्ता को कायम रखा लेकिन उसकी अकाल मृत्यु ने इस संस्था की समाप्ति कर दी।

5) सभ्यता की प्रगति के साथ-साथ शूरधर्म की जगह नई विचारों और संस्थाओं को अधिक महत्व दिया जाने लगा। नाइटों की वीरता व वीरतापूर्ण कर्तव्य सब पुराने पड़ गए। लोग नई विचारों की आवश्यकता महसूस करने लगे। इस तरह शूरधर्म का पतन हो गया।

शूरधर्म की देन -

यूरोप की मध्यकालीन सभ्यता संस्कृति को सामंतवाद की तरह शूरधर्म ने भी व्यापक रूप से प्रभावित किया।

1) उच्च आदर्शों पर जोर :

आदर्शों और संस्कारों पर जोर दिया। इन्होंने इनका महाकाल आमिनता को पुनः से पुनर रचा था। इन्होंने इसका

इन्होंने मानवता को दर्शन दिया जिसे पश्चात्‌कालीन पीढ़ियों ने अपनाकर मानवता का आदर करने का एक आदर्श उपस्थित किया। इन्होंने चर्च द्वारा प्रतिपादित मानवता को अंगीकार कर इस सैनिक संस्था को चर्च के समानांतर ला खड़ा किया।

इसने भाषा और साहित्य के विकास में भी योगदान किया। इस काल में जर्मन, ईंग्लिश, इंग्लिश, इतालियन आदि भाषाओं का विकास हुआ तथा साहित्य रचे गए। परवर्ती कवि और रचनाकार चोसर और दांते इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे।

नाईटों इन्होंने आक्रमणकारियों से यूरोपीय राज्यों की रक्षा की जैसे मूरों को स्पेन की तरफ खदेड़ा, स्लावों को, मग्यारों को हंगरी एवं जर्मनी से निष्कासित किया। नार्स कबीलों को जर्मन में मिलाया तथा इंग्लैंड में ईसाई सभ्यता का विस्तार किया। धर्मयुद्धों में भी उनकी भूमिका अहम थी।

इस प्रकार कुछ कमियों के बावजूद भी इन्होंने अनेक बिंदुओं पर यूरोप को प्रभावित किया।